शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 नवम्बर 2013

महान संगीतकार अमीर खुसरो

प्रो. मंगला जैन, शोधार्थी

आई.पी.एस. एकेडमी, इन्दौर, भारत

शोध संक्षेप

मत सहल हमें जानो, फिरता है फलक बरसों।

तब खाक के पर्दे से इन्सान निकलते हैं।।

'तूती-ए-हिन्द' अमीर खुसरों का जीवनकाल है 1253 ई. से 1325 ई. यह अवधि हिन्दी साहित्येतिहासकारों के मतानुसार वीरगाथाकाल या संक्रमण युग की है । हिन्दुस्तानी इस्लाम धर्म का प्रखर उदय व साम्राज्य का प्रथम चरण इस युग की उपलब्धि है। राजनीतिक दृष्टि से यह भारतीय सम्राटों और सामंतों की पराजय तथा मुस्लिम शासकों की विजय का युग है। अत्याचार, व्यभिचार छल-कपट और हत्या तत्कालीन शासकों का प्रमुख व्यवसाय था; बर्बरता, निर्दयता, कामुकता, लंपटता उनकी चारित्रिक विषेषताएँ थीं। सर्वत्र कुप्रथा, केन्द्रीय शक्ति का अभाव, छोटे सामंतों तथा नरेषों का प्राबल्य राजसभाओं में प्रशस्ति गायकों, चरणों, मुकरियों और मुजकिरों का सम्मान था। "जिसकी लाठी उसकी भैंस" की कहावत हर क्षेत्र में चरितार्थ थी। "अमीर खुसरो काल में देश की ऐसी ही दशा थी और जनता अति निराश, उदासीन और आतंकित थी तब क्या लेखनकार्य की गति अवरूद्ध और खण्डित हो गई थी ?" इतिहास के कतिपय अन्वेषकों का कहना है कि तत्कालीन प्रतिकूल राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों ने दर्शन, साहित्य, संगीत आदि क्षेत्रों की उर्वरता पूर्ण रूप से नष्ट कर दी थी।2 यदि इस कथन का महत्व है तो इसका अर्थ है कि अमीर खुसरो अपने काल का अकेले कला साधक थे। इस मान्यता का परीक्षण संगीत और कला के संदर्भ में किया जा सकता है।

अमीर खुसरो और संगीत

जब हम भारत देश के राजनीतिक उलट-फेर और सामाजिक और सांस्कृतिक विकास और ज्ञान-ध्यान की प्रगति पर सोच-विचार करते हैं तो फौरन हमारा ध्यान पीछे की तरफ जाता है कि वर्तमान के सम्मुख भूतकाल में यह सब क्यों हुआ होगा और जब अगले जमाने से कड़ियाँ मिलाते हुए आते हैं तो आज के समय में समाज और संस्कृति की जो सूरत देखते हैं उसको ठीक तौर पर समझने में हमसे चूक नहीं होती । इसी प्रकार भारतीय संगीत पर जब गहराई से सोचते हैं तो उसमें कई मिले-जुले रंग दिखाई देते हैं और उनको जब अलग-अलग करते हैं तो हजारों बरस पहले के नहीं तो सैकड़ों बरस पहले के रंग साफ-साफ दीख पड़ते हैं।

संगीत संस्कृति का मुख्य शास्त्र होता है । जिस प्रकार अजंता-एलोरा के मन्दिरों की मूर्तियों में उस समय के लोगों की मनोवृत्ति नज़र आती है, उसी प्रकार संगीत में भी लोगों के आचार-विचार, ज्ञान-ध्यान दीख पड़ते हैं। भारतीय संगीत पर अरबी, ईरानी, यूनानी संगीत का प्रभाव पड़ा और भारतीय संगीत-कला से भी उन लोगों और देषों

ने बहुत कुछ लिया है। अमीर-खुसरो के समय के शासकों ने भारतीय कला-षास्त्र की बहुत कद्र की और फारसी में अनुवाद कराए और फायदा उठाया। ब्रज की कविता मठों, मन्दिरों तक ही सीमित थी। अकबर के समय में बड़े-बड़े कवियों और विद्वानों ने ब्रज को मन्दिरों से निकालकर उसमें श्रृंगार रस भरा और उसका विकास किया। हिन्दी-फारसी को मिलाकर 'उर्दू' का निर्माण हुआ और मुसलमानों ने भारतीय संगीत को अपना समझा और उसकी जो सेवा की वह भुला नहीं सकते। अरबी संगीत की धुनें ईरानी संगीत से मिलाकर एक हो गई थी वही भारतीय संगीत से इतनी हिल-मिल गई कि उसे अलग करना कठिन है।

भारतीय संगीत हजारों बरस पुराना है। हजारों साल पहले की किताब 'नाट्यशास्त्र' है। चौथी सदी की 'बृहत देशी', तेरहवीं सदी की सारंग देव कृत रत्नाकर पुस्तक मिलती है। हरिपाल देव की संगीत सुधाकर में हिन्दुस्तानी व कर्नाटकी संगीत अलग-अलग बताए गए। 'इब्ने बतूता' ने लिखा है कि देवगढ़ में संगीतकारों का एक बाज़ार था वहाँ औरतें-मर्द 'ब्रिजिहिनी' पर हर जुमो उनके चौधरी की शान में संगीत संध्या का आयोजन करते थे।

मुसलमानों ने संगीतकला के विकास में व कलाकारों के सम्मान में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। अल्तमश के बेटे फीरोज़शाह, कैकबाद व जलालुद्दीन खिलज़ी और गुजरात के सुलतान बहादुरशाह के दरबार संगीतकारों से भरे हुए थे।

हम नहीं कह सकते कि आरम्भ में मुसलमानों ने किस प्रकार ईरानी और भारतीय संगीत मिश्रित किया, मगर यह अनुमान है कि जिस प्रकार आज फिल्मी धुनों को दुनियाभर के संगीत की धुनों से मिश्रित किया जाता है उसी प्रकार कुछ-कुछ उन लोगों ने प्रयत्न किया होगा जो अच्छा साबित न हुआ होगा । मगर सन् 1251 ई. में भारत में एक सपूत अमीर खुसरो पैदा हुआ जिसने भारतीय संगीत की अमूल्य सेवाएँ की। उससे एक नया ढंग प्रचलित हो गया। उसी को 'हिन्दुस्तानी संगीत' के नाम से याद किया जाता है।

अमीर खुसरो के पिता अमीर सैफुद्दीन, अल्तमश के समय हिन्दुस्तान आए और देहली के नवाब इमाद-उल-मुल्क की बेटी से शादी की। उनसे तीन बेटे हुए थे। उनमें मँझले बेटे अब्दुल-हसन-यम्मीनुद्दीन जो पटियाली गाँव में पैदा हुए और अमीर खुसरो के नाम से प्रसिद्ध हुए जिन्हें अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत और भारत की दूसरी भाषाओं में बड़ी महारत हासिल थी। कविता तो वह दस बरस की उम्र से करने लगे थे व ग्यारह सुल्तानों के दरबारों में ऊँच पद पर आसीन हुए ।

"संगीत के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी समन्वयवादी प्रकृति के अनुरूप परम्परागत भारतीय संगीत और ईरानी संगीत को मिलाकर अनेक राग रागिनियों का आविष्कार किया। ढोलक और तबले जैसे वाद्ययन्त्रों का आविष्कार कर भारतीय संगीत कला के क्षेत्र में खुसरो ने ऐतिहासिक योगदान दिया।"

'दर पये जाना जाँ, हम रफ़्त, जाँ हम रफ़्त, जाँ हम रफ़्त, रफ़्त-रफ़्त, जाँ हम रफ़्त, ई हम रफ़्तो आँ, हम रफ़्त, आँ हम रफ़्त, आँ हम रफ़्त आँ हम रफ़्त, ई हम आँ हम, ई हम आँ, हम आँ, हम रफ़्त, रफ़्तन रफ़्तन रफ़्तन देह देह रफ़्तन, देह रफ़-रफ़, रफ़्तन देह, रफ़्तन देह'।

यह शब्दों का ही चमत्कार है कि धुनके की आवाज़ सार्थक संगीत की ध्वनि में बदल गई । नूह-सिपहर ग्रंथ में खुसरों लिखते हैं कि हिन्दूस्तानी संगीत एक आग है, जो मन और आत्मा दोनों को जलाती है और अन्य सभी देषों से उत्तम है। वह यह भी लिखते हैं कि भारतीय संगीत केवल व्यक्तियों को नहीं बल्कि पशुओं को भी मन्त्रमुग्ध कर देता है। यहाँ तक कि हरिण इसे सुनकर चेतना शून्य हो जाते हैं। खुसरो लिखते हैं कि- ‘‘सरोद के मीठे संगीत को सुनकर फरिष्ता भी इसमें इस प्रकार फंस जाता है जिस प्रकार शहद में मक्खी.....। यहाँ के संगीत की ध्वनि जब अरब पहुँचती है तो बग़दाद और मिस्र के गाने वालों की जब़ान खामोश हो जाती है ।’’ भारतीय संगीत की ऐसी तारीफ भावनात्मक एकता के अग्रदूत अमीर खुसरो ही कर सकता है । खुसरो ने अपने समय के परम्परागत संगीतज्ञों की तीन श्रेणियाँ बनाई हैं - 1. कलावंत हिन्दी 2. फारसी गज़ल गायक 3. कव्वाल।

नये रागों का आविष्कार:-

मुहम्मद हुसैन आज़ाद लिखते हैं कि खुसरो की प्रकृति एक बीन थी जो बिन बजाय पड़ी बजती थी। उसने ईरानी रागों को भारतीय रागों से मिलाकर कई नए रागों का निर्माण किया। कई ईरानी धुनों को हिन्दी संगीत में सम्मिलित किया। ऐसे रागनियों और धुनों में जिंगोला, हिज़ाज और नौरोज़ नाम प्रसिद्ध है जो हिन्दी में जंगला, हज़ीज, नुवर चंगा के नाम से जाने जाते हैं। हिन्दी संगीत में कुछ धुनों का अविष्कार किया जैसे-कौल, तराना, नक्ष, गुल, कल्बाना, बसीत, सुहैला आदि। फकीरूल्लाह के राग दर्पण में जिनका उल्लेख है वे निम्न हैं -

1. राग मुजीर - ‘ग़ारा’ और एक फारसी राग का मिश्रण है।

2. राज़गिरी - पूर्वी, गौरा, गुण, कली और एक फारसी राग का मेल है।

3. ऐमन - हिंडोल में फारसी राग ‘नौरोज़’ मिलाया गया है।

4. उश्शाक - सारंग, बसन्त और एक फारसी राग से मिलकर बना है।

5. मुवाफिक - तोड़ी मालसरी और फारसी दो गाह हुसैनी को मिश्रित किया गया है।

6. गनम - पूर्वी में परिवर्तन किया गया है।

7. ज़ील्फ ’ खट राग में फारसी राग ‘षहनाज़’ को मिला कर बना है।

8. फरगाना - सोलह हिन्दी रागों में एक फारसी राग मिलाया गया।

9. सर पर्दाह - गौड़ - सारंग और बिलावल में फारसी राग या धुन ‘रास्त’ को मिलाया गया है।

10. बाखर्ज - विकार में फारसी राग मिलकर बना है।

11. फरो - दस्त - कानड़ा गौरी और पूरबी के साथ एक फारसी राग मिलाया गया है।

12. मुनअम (सग़म) - राग कल्याण में एक फारसी राग मिलाया गया है।

ताल - खुसरो ने फारसी बहरो और वज़नों को सामने रखकर जिन सत्रह तालों को प्रचलित किया वे ये हैं -

पश्नों, जूबहर, कव्वाली, सोल फख्ता, होरी, (जत) जला-तिलाला, सवारी, आड़ा चैताला, झमरा, झपताल, खम्सा, फरोदस्त, पहलवान, कैद, दास्तान पटताल और चपक।

खयाल - कहा जाता है कि खयाल भी खुसरो का ही अविष्कार है और इसलिए उन्हें खयालों का नायक कहा जाता है। ध्रुपद की पवित्रता व कलासिकी महत्व को न समझ पाने के लिए खुसरो ने ध्रुपद के स्थान पर ख्याल का अविष्कार किया था। कव्वाली के अविष्कार का श्रेय भी खुसरो को ही जाता है। अबुल फज़ल ने लिखा है कि समिति (भारतीय कलाकारों की मंडली) की सहायता से तराने का भी आविष्कार किया था।

इसके अतिरिक्त पुराने रागों में नई धुनें मिलाकर गौड़-मल्हार से एक प्रकार का नया 'कानड़ा' बनाया और उसका नाम 'बागे श्री' कव्वाली रखा। इसी प्रकार सारंग के मेल से कानड़ा-शाहना का आविष्कार किया।

कव्वाली - कव्वाली या कौल (वचन) टोली का गाना है। खुसरो ने ऐसी बहुत सी कव्वालियाँ अलग-अलग रागों में बिठलाई है। सूफी आनन्द विभोर होकर वजद (बेखुदी की हालत) करने लगते थे।

कल्बाना - कल्बाना में अरबी या फारसी - हिन्दी के शब्द और विचार मिलाए जाते हैं। इसमें कई तालें शामिल होती हैं जबकि कौल केवल एक राग और एक ताल में होता है। इसमें हर टुकड़े के साथ ताल बदल जाती है अतः इसे तालसागर भी कहा जाता है। यह खुसरो की ही देन है जो आज तक चली आ रही है। इसमें स्थायी और अन्तरा दो ही भाग होते हैं जैसे -

स्थायी - 'लकद सद कुल्लाह तआला - भेजो दरूद और सलाम ।'

अन्तरा - 'अमीर खुसरो बल - बल जावे, हज़रत के दरबार गावे ।'

धमाल - उस गाने का नाम है जो सूफियों की महफिल में 'हाल' और 'काल' में गाया जाता है। खुसरो ने इस गाने और इसके साथ की ताल का नाम धमाल रखा।

मंढा - दुल्हन की विदाई का गीत है। खुसरो ने इसे आत्मा और परमात्मा के प्रतीक के रूप में गाया है।

वाद्य यन्त्रों का आविष्कार

खुसरो ने तीन तारों के वाद्ययन्त्र से सह (तीन) तार बनाया जो सितार के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आगे चलकर इसमें सात तार हो गए। भारत में बीन (वीणा) पुराना और सुरीला बाज़ है। जिस प्रकार से उसने 'ध्रुपद' से खयाल निकाला, उसी तरह वीणा से 'सितार' का निर्माण किया। यह बड़ा मस्त कर देने वाला वाद्य यन्त्र है। इसको या तो अमीर बजाता है या फकीर। 'ढोलक' और 'तबला' भी खुसरो के ही आविष्कार माने जाते हैं। हमारा पुराना वाद्य पंखावज था। खुसरो ने इसे दो भागों में विभाजित किया और 'तबला' बनाया। ढोलक भी खुसरो की ईजाद है। इसे पंखावज का लघु रूप माना जाता है। औरतों के गीत में ही

नहीं, कव्वाली में भी इसका प्रधान पद है। इसी की थाप-चाट से बोल चमकते हैं।

हिन्दुस्तानी संगीत:-

खुसरो ने जहाँ दो संस्कृतियों के साहित्य में समन्वय का प्रयास किया ..... वहीं दोनों संस्कृतियों की संगीत कला को भी एक दूसरे के समीप लाकर सामंजस्य स्थपित करने का ऐतिहासिक प्रयत्न किया, जिससे दोनों के मेलजोल से नए राग-रागिनियों और वाद्ययन्त्रों का आविष्कार हुआ और संगीत के दो ढंग 'कर्नाटक संगीत' और हिन्दुस्तानी संगीत प्रसिद्ध हुए। खुसरो के इस कार्य को आगे वाले बादषाहों, सुल्तानों, नवाबों, राजाओं ने संरक्षण देकर आगे बढ़ाया। सूफियों, फकीरों, हिन्दु, मुसलमानों ने इसे लोकप्रियता प्रदान की।

अकबर के दरबारी गायक तानसेन ने खुसरो की प्रशंसा में एक पूरा ध्रुव पद रच डाला-

तानसेन के तुम भू नायक खुसरो,

करत स्तुति गुण गायो रे

इन्द्रप्रस्थ मत:-

आचार्य बृहस्पति लिखते हैं - राग, ताल और अपनी भाषा के मेल से एक खुसरो स्कूल का निर्माण हुआ, जिसके काम को मुसलमानों ने इल्म खुसरो और हिन्दुओं ने इन्द्रप्रस्थ मत कहा। यह परम्परा आज तक दिल्ली घराने के रूप में चली आ रही है। कव्वाल इसी के अनुयायी हैं।

बसन्त:-

खुसरो ने भारतीय परम्परा से प्रभावित होकर बसन्त के गीतों को भी दरगाहों और खानकाहों में लोकप्रिय बनाया। हिन्दु बसन्त के मेले पर कालकाजी के मन्दिर में सरसों के फूल चढ़कार मस्त होकर बसन्त राग गा रहे थे यह मनोहरी दृष्य देखकर अमीर इतने भावविभोर हुए कि बसन्त राग बना डाला फिर प्रतिवर्ष कालकाजी के मेले पर वे सूफी कव्वलों को लेकर जाते और बसंत गीत व कव्वाली गाते। धीरे-धीरे दिल्ली की दरगाहों में पन्द्रह दिन तक बसंत मेला रहने लगा। यह खुसरो की ही देन है।

उपसंहार

खुसरो की बहुमुखी प्रतिभा का परिचय उनके संगीतज्ञ के रूप में भी मिलता है। उनकी यह उपलब्धि सामान्य नहीं थी। उनकी उपलब्धि के लिए उन्हें 'नायक' की उपाधि मिली । हजरत निजामुद्दीन औलिया उनके दीक्षा गुरू थे। दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात आत्मविभोर होकर जो कुछ गाया वह आज 'रंग' के नाम से अभिहित किया जाता है। शुरू के बोल इस प्रकार हैं:-

ए माँ रंग हैं

मैं पीर पाया निजामुद्दीन औलिया,

आज रंग हैं।

संगीत जगत् को यह इस बालक का प्रथम प्रसाद है। कंठ माधुर्य के कारण गुरू ने इनको 'म्ताहुस-समां' (संगीत की कुंजी) की उपाधि से विभूषित किया। संगीत क्षेत्र में जो आविष्कार खुसरो ने किए, वे आज भी संगीत शास्त्र की अमूल्य निधि है। आप दो संस्कृतियों के संगम हैं। बहुत-से बाजे तथा राग-रागिनियों के आप अन्वेषक हैं।

अरबी, फारसी तथा हिन्दी लयों के सम्मिश्रण से आपने अनेक रागों का आविष्कार किया। कौल, कुलवा-नह, कव्वाली, तराना जो आज के लोकप्रिय राग हैं, इनका भी संबंध खुसरो से ही है। हदीसों को लोकप्रिय बनाने तथा प्रचार के लिए आपने संगीत की सहायता ली। ऐसे संगीत को 'कौल' के नाम से पुकारा जाता है।

जब हम मुसलमानों के भारत में आने के बाद इसको अपना वतन बना लेने और इस देष की विद्याओं की उन्नति में हाथ बँटाने और उनमें अमूल्य वृद्धि करने पर सोच-विचार करते हैं तो मालूम होता है कि इनके प्रयत्नों के फलस्वरूप विद्या, साहित्य और कलाओं में वृद्धि अवष्य हुई मगर इससे बड़ा अमूल्य पाठ तो एकता का मिलता है। उन सूफी संतों में एकता बढ़ाने के लिए विद्या, साहित्य, कला - सबको काम में लिया और एकता कायम की।

अमीर खुसरो उन्हीं बड़े लोगों में से एक थे जिन्होंने संगीत के जरिए एकता कायम की। हम खुसरो के बारे में बहुत कम जानते हैं क्योंकि इस पर संषोधन करने का किसी ने इरादा नहीं किया और न जानने का। दूसरा कारण यह भी है कि यह कला उस्ताद ने शार्गिद के दिल में डाल दी। इसीको खुसरो ने इस प्रकार बयान किया है। वे कहते हैं, "संगीत वह विद्या है जो मन में जाती है, यह शब्दों में लिखी नहीं जाती। अगर जो ऐसा होता तो कई दफ्तर लिख डालता।

आज खुसरो के द्वारा आविष्कृत राग अतीत की वस्तु हो गए हैं। तराना अवष्य गाया जाता है, उसका रूप भी बदल गया है। 'ठाठ पद्धति' या 'मेल पद्धति' के रूप में खुसरो का राग वर्गीकरण जीवित हैं।

सन्दर्भ

1 'तूती-ए-हिन्द' अमीर खुसरो - डाॅ. राजनारायण राय पृष्ठ नं. 10

2 Older historians, on the other hand, cling to opinion that the period (1206-1526) from literary and cultural point of view, was entirely barren. - Dr. Ashirbadi lal srivastava : The sultanate of Delhi, P. 338

3 अमीर खुसरो और भारतीय संगीत - सय्यद जहीरूद्दीन मदनी।
4 भारत की महान विभूति-अमीर खुसरो व्यक्तित्व व क्रुतित्व, डाॅ. परमानन्द पाँचाल पेज 20 से 25 तक।